शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' : सहजीविता–सामूहिकता के संघर्ष की रचनात्मक अभिव्यक्ति

प्राप्तिः 20.05.2023
स्वीकृतः 25.06.2023

शायनी सिन्नरकर
शोधार्थी
सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र
ईमेलः *shayanisinnarkar07@gmail.com*

43

सारांश

बाघ और सुगना मुंडा की बेटी कविता अपनी विधा में एक लंबी कविता है। इसमें आदिवासी जीवन का काफी व्यापक परिदृश्य मिलता है। आदिवासी ऐतिहासिक नायक–नायिकाओं की प्रतिस्थापना और पुनर्रचना क्रांति की चेतना प्रस्तुत करती है। मुख्यतः यह कविता सहजीविता–सामूहिकता के संघर्ष की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। सहजीवितावाद मूलतः एक जीवनदर्शन है इसीलिए उसका संबंध स्वायत्तता से है। फैंटासी शैली में रचित यह कविता आदिवासी वर्तमान समय को दर्शाती है। यहाँ आदिवासियों का अंतरिक उपनिवेशीकरण भी खुलकर सामने आता है।

मुख्य शब्द

आदिवासी स्वायत्तता, सहजीविता, जीवनदर्शन, संघर्ष, सामूहिकता, लोकतंत्र, लंबी कविता।

प्रस्तुत कविता 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' आदिवासियों के सहजीवितावादी दर्शन की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। यह रणनीतिक मार्ग का अनुसंधान करने वाली एक लंबी कविता है। एक ऐसा रणनीतिक मार्ग जो वर्चस्ववादी शासन के समय में स्वायतत्ता और सहजीविता अर्थात् जल, जंगल, जमीन के बचाव के लिए जरुरी हस्तक्षेप है। 'रणनीतिक मार्ग के अनुसंधान' का अर्थ है कि पुरखों से संवाद करके, उनके संचित अनुभव ज्ञान से विचार प्रक्रिया को संतुलित और अन–बायस्ड बनाना एवं बाघ के हर एक ऍक्शन को समझकर प्रत्युत्तर के लिए तैयार रहना।

'बाघ' और 'सुगना मुंडा की बेटी' का संबंध क्रमशः इतिहास, सभ्यता, प्रवृत्ति एवं आदिवासी संघर्ष (सहजीविता भी) से है। बाघ यहाँ इतिहास का विजेता, सभ्यता का निर्माणकर्ता एवं विशेष प्रवृत्ति भी है जो सत्ता, संपत्ति और वर्चस्व की लालसा से पनपती है। बाघ का दर्शन वर्चस्ववादी है। 'सुगना मुंडा की बेटी' (बिरसी) इस संपूर्ण कविता में (यथार्थ में भी) 'बाघपन' का प्रतिपक्ष है। इसलिए भी बाघ अधिक प्रबलता से हमलावार होता जाता है। सहजीविता का अर्थ केवल साथ रहना न होकर प्रकृति के सभी जड़–चेतन घटकों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए जीवन जीना है। मूलतः यह एक दर्शन है इसलिए उसका परस्पर संबंध 'स्वायत्तता' से है।

कविता में बाघ के हमले के बाद इतिहास और सहजीविता पर अनेक संवाद मिलते हैं। यह

संवाद बिरसी का अपने दो पुरखें रीड़ा हड़म और डोडे वैद्य से है। यहाँ दो पुरखों की दार्शनिक अभिव्यक्ति कविता में फैंटसी को उत्कृष्ट और अर्थवान बनाती है। बाघ की दार्शनिक उपस्थिति इन दो पुरखों के संचित ज्ञान से युक्त संवादों से अधिक स्पष्ट होती है और इतिहास के अर्थ लगने लगते है। आदिवासियों के इतिहास में इस बाघ से संघर्ष, उलगुलान, विद्रोह हुए हैं परंतु वर्तमान समय में भी वही बाघपन प्रवृत्ति (आंतरिक उपनिवेशीकरण के माध्यम से) अधिक प्रखर हुई है। चूँकि यह लड़ाई सर्वप्रथम दार्शनिक स्तर पर शुरु है इसलिए उसका हमेशा के लिए अंत संभव नहीं है। वर्चस्व की राजनीति है इसलिए सहजीविता को प्रतिपक्ष बनाकर रचनात्मक अभिव्यक्ति हो रही है–

''लड़ाईयाँ कभी खत्म नहीं होती
लक्षित लक्ष्य के बाद भी
संघर्ष जारी रहता है।''[1]

अनुज जी की आस्था केवल संघर्ष में नहीं सहजीविता में सबसे पहले है। इसलिए इस समय से निर्मित दीर्घकालीन तनाव कविता में अभिव्यक्त हुआ है। इस तनाव की वजह से बिरसी अवचेतन में पुरखों से साक्षात्कार, संवाद करती है। ऐसा नहीं है कि वह आदिवासी चेतना से युक्त नहीं है। परंतु गाँव में बाघ का हमला वह प्रत्यक्षरुप से देखती है और इस निर्णय पर पहुँचती है कि उसे इस परिस्थिति से संघर्ष करना है। बाघ ताकतवर बन चुका है। उसके अत्याधिक ताकतवर बनने के पीछे आदिवासियों के बीच में से ही बन रहे उलटबग्घों का भी हाथ है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य प्रस्तुत कविता में अभिव्यक्त सहजीविता और संघर्ष को स्पष्ट करना है। यह कविता आदिवासी विमर्श में चल रहे मुख्य विषय गैर आदिवासी और आदिवासियों के दार्शनिक और परिणाम स्वरुप वैचारिक संघर्ष को प्रमुखता से अभिव्यक्त करती है। अपनी विधा में यह एक लंबी कविता है। गतिशील वर्तमान, समाज इतिहासिक प्रक्रिया, प्रदीर्घ अनुभव, दार्शनिक द्वंद्व, दीर्घकालीन तनाव और इन समग्र उपादानों को बांधने के लिए इसमें 'फैंटसी शैली' का प्रयोग हुआ है।

यह संघर्ष पहाड़ी के उस पार में मौजुद बाघ से है जहाँ मुख्यधारा का समाज रहता है। इस समाज के विचार प्रक्रिया का बहुत बारीकी से अंकन किया गया है। 'जंगल के उस पार' रहनेवाले लोगों को जंगल में चलाया जा रहा अभियान सही लगता है। उनके सामने यह पेश भी किया जाता है कि हम नक्सलवाद से मुक्ति चाहते है ताकि देश के विकास में कोई बाधा ही न पहुँचे। इसलिए 'जंगल के उस पार' वाले लोग यानि अनादिवासियों को बाघ के हमले से कोई शिकायत नहीं रहती–

''जहाँ से वह छलाँग लगाता है
वहाँ के लोगों को लगता है
यह उचित और आवश्यक है''[2]

यह सोचनेवाली बात है कि हमारे किसी भी भौतिक विकास के सामने आदिवासी अपने गाँवों की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं तब वे 'विकास प्रकल्प विरोधी आदिवासी' ही कहे जाते है। परंतु जैसे ही इस संघर्ष में वे मार दिए जाते हैं तब समाचार पत्र में उनके नक्सली तत्वों से जुड़ने के आरोप भी सिद्ध हो चुके होते हैं।

बाघ की इस विचारधारा और उसके हमलों ने ''समूची पृथ्वी को दो हिस्सों में बाँट दिया है।''[3] एक है–वर्चस्ववादी और दूसरा है–सहजीवि। इस विभाजन का एक लंबा इतिहास रहा है। जिसकी शुरुआत मिथकों से होती है और वर्तमान में उसका स्वरुप 'आंतरिक उपनिवेशीकरण' है।

कविता में सुगना मुंडा का दर्शन अभिव्यक्त हुआ है जो समस्त आदिवासी समाज का है। सहजीविता का अर्थ यहाँ स्पष्ट हुआ है–

''सुगना मुंडा जंगला का पूर्वज है
और जंगल सुगना मुंडा का
कभी एक लतर था तो दूसरा पेड़
कभी एक पेड़ था तो दूसरा लतर।''[4]

उसके सहजीविता के विस्तार में संपूर्ण पृथ्वी ही है –

''उसे पृथ्वी पर भरोसा था कि
चेतना और विचार
उसी के उपादानों से आते है।''[5]

परंतु सुगना मुंडा का समय अब बदल चुका है। यथार्थ में और इसलिए कविता में भी! दरअसल सहजीवि दुनिया में बाघ का यह पहला साक्षात्कार है कि लिखित ही प्रामाणिक बन गया है–

''उसने यह भी जाना कि
उसके साथी
उसके सहजीवि
उसकी जमीन
उसके जंगल
उसकी नदियाँ
उसकी आजादी
उसका सम्मान
सब खतरे में हैं।''[6]

अर्थात् सहजीविता ही खतरे में है।

बिरसी को खिले हुए फूल की उपमा दी गई है। जो अपने लाल रंग से बाघों को चुनौती देती रही है। जिस प्रकार सुगना मुंडा के फूल जंगल में खिलते रहें, उसी प्रकार गैर आदिवासी दुनिया में भी–

''लेकिन सुगना के लिए
इनमें नहीं थी सुगंध
कहीं नहीं थे पराग।''[7]

जाहिर है, ये खिले हुए फूल अपने ग्रंथों में अनार्यों को रीछ, बंदर, जंगली, राक्षस के रुप में चित्रित करते रहे। बाद में ब्रिटीश शासन के समय में भी आदिवासियों के साथ कोई सम्मानजनक व्यवहार नहीं हुआ। आधुनिक समय में भी वे आंतरिक उपनिवेशीकरण के शिकार है।

''हर बार फूल खिलते रहे कि
दुनिया पहले से और ज्यादा सुंदर हो।''[8]

कविता में बिरसी की रणनीति बनाती, पुरखों से संवाद करके सीखती हुई संघर्षात्मक उपस्थिति की वजह भी यही है।

बाघपन एक प्रवृत्ति है। जो भेदाभेद, वर्चस्व और अतिरिक्त की लालसा से बनती है। भौतिक भूख, लैंगिकता, पितृसत्ता इ. घटकों से ही उसकी पहचान होती है। ऐसे बाघ को आदिवासी समाज की सहजीविता पराजित करती है। जिसमें किसी भी सत्ता का स्वीकार नहीं किया जाता–

''सदियों से बाघ
हमें अपने खूनी पंजों में
जकड़ने की कोशिश करता रहा है
हर बार हमारी सहजीविता ने उसे पराजित किया है
हमारी सहजीविता ही बनाती है
भेदरहित मजबूत रिश्ते
सत्ता और वर्चस्व
अपने बाघपन से ही जीवित रहती है।''[9]

तीसरे खंड की शुरुआत बाघ के हमले से होती है। इसमें रीड़ा हड़म बिरसी को बाघ की वैचारिकी समझाते है। इस खंड के दूसरे भाग में बिरसी और अन्य छह शिष्यों का डोडे वैद्य से संवाद हैं। डोडे वैद्य गीत, मंतर और उनकी शक्ति, कार्य इ. के बारे में संवाद करते है। 'सहजीविता' का निर्वहन यहाँ लेखन शैली में भी है। कविता अधिकतर संवादों में ही लिखी गई है। 'संवाद' लोकतंत्र का पहला परिणाम है। इसलिए ''यह सहजीविता लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बहुत गहरे से जन्म देती है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया का जो सबसे आधारभूत तत्व है, वह है संवाद की प्रक्रिया। लोकतंत्र यानी ज्यादा से ज्यादा संवाद करना। ज्यादा से ज्यादा सवाल करना।''[10] यह भाग सहजीविता को व्यापकता से पेश करता है। इस भाग में शिष्यों की परीक्षा होती है। यह परीक्षा आदिवासी विमर्श से जुड़े सात महत्वपूर्ण विषयों पर होती हैं जिसके मूल में सहजीविता का कन्सर्न है।

इसी खंड में बिरसी का एक संबोधन है, ''यह बिजापूर है।''[11] इसके बाद बिजापूर के रुपकत्व की पहचान पाठकों को होती है। कोई गाँव 'बिजापूर' होने का अर्थ ही है कि वह सत्ताओं का और बाघ के दर्शन का प्रतिपक्ष है–

''बीजापूर केवल एक रुपक है
दण्डकारण्य केवल एक रुपक है
धरती पर जहाँ भी
धरती अपने संपूर्ण परिजनों के साथ है
जहाँ भी तितली फूलों पर
पंछी अपने पेड़ों पर
मछली अपनी नदियों में

हिरन अपने जंगल में है
वहाँ–वहाँ सहजीविता है
और वहाँ निजी लाभ के लिए
हमारी मेहनत और हमारे सौंदर्य पर
वर्चस्व का प्रसार
दार्शनिक द्वंद्व का कारक है।''[12]

दार्शनिक द्वंद्व के कारक वैचारिकता और उससे निर्देशित व्यवहार से संबंधित करने पर एक मूलभूत अंतर हम उसमें देख पाते है। गैर आदिवासी समाज के सभी क्रियाकलाप के केंद्र में केवल और केवल मनुष्य है। उसका ही विकास, उसका ही आनंद और उसकी ही सर्जना। इस क्रियाकलाप में प्रकृति उसकी सहजीवि नहीं बल्कि उपभोग की एक वस्तु मात्र बनी। क्योंकि विकास की संकल्पना में भौतिक पक्ष ही हावी रहा और एकमात्र भी। जिसकी बुनियाद पूँजी, सत्ता और बाजार है। थोड़ा ध्यान से देखने पर ये तीनों पीलर्स उपनिवेशवाद के भी है। इसके विरुद्ध आदिवासी जीवन में मुख्य विचारणीय तत्व सहजीविता रही है–

''ये सवाल अब तक कथित सभ्य
और मानवीय लोगों के लिए विचारणीय नहीं थे
उनके विचार के केंद्र में नहीं थी सहजीविता
उनके लिए यह जीवन
मनुष्य केंद्रित था
जबकि यह धरती केवल मनुष्यों की नहीं है।''[13]

इस लंबी कविता की विशेषता है – गीतों की योजना। 'गीत' आदिवासी जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। गीत के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण स्थापना यह है कि, ''गीत ही मंतर है।''[14] डोडे वैद्य और सात शिष्यों के संवादों में गीत और मंतर को पर्यायवाची माना गया है। मूलतः यह मंतर क्या है? इस पर डोडे वैद्य गैर आदिवासी दृष्टीकोण का खंडन करते हुए बताते है कि यह कोई जादू–टोना नहीं है। यहाँ मंतर का इस्तेमाल ''जीवों के बाहय और आंतरिक विशेषताओं और विसंगतियों का ज्ञान''[15] प्राप्त करने के लिए होता है। मंतरों के कारण ही शिष्यों के सामने विशेष सात परिदृश्य उभरते है जहाँ उन्हें परीक्षा देनी है। कविता के संदर्भ में मंतरों के माध्यम से सात शिष्य बाघ की पहचान करते है।

आदिवासी जीवन दर्शन के अनुसार मंतरों के निर्माण में प्रकृति के दृश्य–अदृश्य, बोले–अबोले घटक सहाय्यक होते हैं। दूसरा, मंतरों या गीतों का उपयोग ही 'सहजीवन' का आभार प्रकट करने के लिए होता है–

''इस धरती में जीवन के तंतु
एक–दूसरे प्राणियों से ही बुने है।
हम अपने जीवन के लिए सबके आभारी है
प्रकृति में कोई भी किसी के बिना अधूरा है

एक के बिना दूसरे की पहचान अधूरी है
संपूर्ण जीवन में हम अपने सहजीवियों से
प्रत्यक्ष संवाद नहीं कर पाते है
यह मंतर उनसे संवाद का माध्यम है।''[16]

जब हम सहजीवितावाद के लिए संघर्ष कहते है तब यह गीत–मंतर की और परिणाम स्वरुप पुरखों–सहजीवियों के प्रति आभार प्रकट करने की संस्कृति से भी संबंधित होता है। यानि बाघ के हमले का प्रभाव आदिवासी जीवन पद्धति और उसके घटक–संस्कृति, सहजीविता, भाषा, उत्पादन प्रणाली, सामाजिक संरचना इ. सभी घटकों पर होता है।

इस दार्शनिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति बिरसी गीत में सुनती है–

''हे चितरी चरई
हे असकाल पक्षी
जंगल तो जल रहा है
पहाड़ तो धधक रहे हैं
हम दाना चुगने कहाँ जाऐंगे
हम गाना गाने कहाँ जाऐंगे।''[17]

गीतों के माध्यम से सहजीवियों से संवाद किया जाता है। साथ ही उनका आभार मान लिया जाता है। प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों रुप के बीच से जीवन आसान और आनंदी बनाने वाले तत्वों के प्रति यह अभिव्यक्ति है–

''हमने अपने सहजीवियों के
सम्मान में उपवास किया
ताकि वे हमारी आँखों से ही
समझ सकें हमारी भावना
और उनकी भावना में उतर आये अस्पर्श नमी
हमने उन्हें नहलाया
कुजरी तेल से तेलाया
उड़द, चावल, नमक की टीप दी
उन्हें धन्यवाद कहा कि
उन्होंने हर बार की भाँति
इस बास भी हमारी खेती सम्पन्न की
वे हमारे बच्चों की आँखों की हँसी हैं
हमारे पुरखों की शान्ति के कारक
हमने उन्हें हँड़िया, सिन्दूर अर्पित किया
हमने उनके पुरखों को स्मरण किया कि

उन्होंने ही हमें घने जंगलों के बीच
जीवन का सहारा दिया
वे हमारे टोटेम हैं, हमारे रक्षक,
हमने स्मरण किया 'टूंटा साईल काचा बियर' को
कि उन्होंने आदिम दिनों में
हमारे जीवन का जोखिम भरा रास्ता साफ किया।''[18]

स्पष्ट है, दिकुओं की तरह प्रकृति के हर एक हिस्से को बाजार में बेचकर उससे पूँजी कमाना आदिवासी जीवन का हिस्सा नहीं है। यहाँ प्रकृति के दोनों रुपों के साथ जीते हुए समतोल बाँधना है। प्रकृति का विध्वंस करके उस पर जीत हासिल करने का दंभ यहाँ हमे नहीं मिलता। आदिवासियों की सहजीविता प्रकृति से संवाद और सम्मान इन दो तत्वों पर टीकी हुई है–

''संवाद और सम्मान
सहजीविता के लिए अनिवार्य शर्त है
जंगलों से, नदियों से
पेड़ों से, जुगजुओं से, तितलीयों से
दृश्य–अदृश्य, बोले–अबोले प्रकृति से
विश्व कल्याण के लिए।''[19]

इसके साथ ही आदिवासी गणतंत्र के जरुरी खूँटों की उपस्थिति इस सहजीविता के दर्शन को पूर्ण बनाती है। यह दृष्टीकोण श्रम के शोषण के खिलाफ और मदाईत के पक्ष में खडा होता है। और इन सभी की दार्शनिक अभिव्यक्ति गीतों के माध्यम से होती है। इसलिए गीत 'मंतर' है। रोगनिवारक औषधि। (बाघपन 'रोग' है।) इस औषधि से समाज में सामूहिकता पनपती है। इसीलिए–

''सहजीविता की समझ ही ज्ञान है
संवेदनाओं, अनुभूतियों की पहचान ही ज्ञान है
ज्ञान प्रतिस्पर्धा नहीं प्रेम सिखाता है।''[20]

इस संपूर्ण संघर्ष के लिए जल, जंगल, जमीन की माँग महत्वपूर्ण है। स्वायतत्ता और सहजीविता के होते हुए ही बाघ को हराया जा सकता है। कविता के अंतिम भाग में अनुज जी ने संघर्षरत सहधर्मियों को (द्विप के बाहर के) संबोधित किया है। यहाँ 'सामूहिकता' में द्विप के बाहर के जनवादियों को शामिल करके उसे एकांगी होने से बचाते हुए कवि ने अपनी वैचारिकता को स्पष्ट किया है–

''यह देश बहुजन का है
यह दश बहुजन का होगा
दलित–पिछड़े, आदिवासी, स्त्री
सब शोषित जन, सब सर्वहारा
अस्तित्व और अस्मिता के साथ
आँख तरेरेंगे आदमखोर को।''[21]

'ज्ञानात्मक संवेदना' और 'संवेदनात्मक ज्ञान' के दो चरण पूरे होने के बाद कविता के अंत में बहुजन की अवधारणा रखी है। सहजीवितावादियों के संघर्ष के लिए गीत, धनुष, समूह और नेतृत्व करती हुइ बिरसी संघर्षधर्मियों को न्योता देती है और वही अखड़ा बनता है।

संदर्भ

1. लुगुन, अनुज. (2018). बाघ और सगुना मुंडा की बेटी. वाणी प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **46.**
2. वही. पृष्ठ **33.**
3. वही.
4. वही. **36.**
5. वही. पृष्ठ **37.**
6. वही. पृष्ठ **38.**
7. वही. पृष्ठ **39, 40.**
8. वही. पृष्ठ **40.**
9. वही. पृष्ठ **43.**
10. टेटे, वंदना. (सं.). (2016). आदिवासी दर्शन और साहित्य. विकल्प प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **100.**
11. लुगुन, अनुज. (2018). बाघ और सगुना मुंडा की बेटी. वाणी प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **46.**
12. वही. पृष्ठ **56.**
13. वही. पृष्ठ **57.**
14. वही. पृष्ठ **71.**
15. वही. पृष्ठ **66.**
16. वही. पृष्ठ **67.**
17. वही. पृष्ठ **59.**
18. वही. पृष्ठ **72, 73.**
19. वही. पृष्ठ **74.**
20. वही. पृष्ठ **76.**
21. वही. पृष्ठ **105.**

आधार ग्रंथ सूची

1. लुगुन, अनुज. (2018). बाघ और सगुना मुंडा की बेटी. वाणी प्रकाशनः दिल्ली।
2. टेटे, वंदना. (सं.). (2016). आदिवासी दर्शन और साहित्य. विकल्प प्रकाशनः दिल्ली।